घर में विघ्न

भारत का संसदीय लोकतंत्र, जिसकी जीवंतता के लिए विश्व स्तर पर सराहना की जाती है, विधायी कार्यवाही में बार-बार व्यवधान के कारण एक गंभीर चुनौती का सामना कर रहा है। इस तरह का व्यवहार न केवल बहुमूल्य समय और संसाधनों को बर्बाद करता है बल्कि लोकतांत्रिक संस्थानों में जनता के विश्वास को भी कम करता है।

2024 में संसदीय व्यवधानों पर डेटा: (स्रोत: पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च)।

शीतकालीन सत्र गतिरोध:

विवादास्पद विधेयकों और शासन संबंधी मुद्दों पर चर्चा की मांगों को लेकर व्यवधान के कारण निर्धारित समय का 32% से अधिक समय बर्बाद हो गया।

बजट सत्र गतिरोध:

लोकसभा और राज्यसभा ने अपने निर्धारित समय से केवल 45% और 31% समय तक काम किया। बार-बार वॉकआउट और विरोध प्रदर्शन:

विपक्षी दलों ने बेरोजगारी और मुद्रास्फीति पर चर्चा सहित प्रमुख बहसों को बाधित करते हुए 17 बार वॉकआउट किया।

घटती विधायी उत्पादकता:

लगातार चार सत्रों में उत्पादकता 50% से नीचे गिर गई, जो एक दशक में सबसे कम है।

बार-बार व्यवधान के पीछे कारण:

आम सहमति का अभाव: सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के बीच गहरा ध्रुवीकरण।

विवादास्पद विधान: पूर्व-विधायी परामर्श के अभाव से प्रतिरोध होता है।

विपक्ष की अनसुनी मांगें: विपक्ष द्वारा उठाए गए मुद्दों पर अपर्याप्त सरकारी प्रतिक्रिया।

प्रक्रियात्मक उल्लंघन: नारेबाजी करना और सदन के बीचों-बीच हंगामा करना जैसे असंसदीय व्यवहार का प्रयोग।

भारत में गृह व्यवधानों को संबोधित करने वाले कानून

प्रक्रिया और कार्य संचालन के नियम: पीठासीन अधिकारियों को मर्यादा बनाए रखने का अधिकार प्रदान करना।

अनुच्छेद 105 (विशेषाधिकार): सांसदों की बोलने की स्वतंत्रता की रक्षा करता है लेकिन अनियंत्रित व्यवहार की नहीं।

सदस्यों के लिए आचार संहिता: नैतिक और अनुशासित व्यवहार पर जोर देती है।

लोकसभा का नियम 374(ए): गंभीर कदाचार में लिप्त सदस्यों के स्वत: निलंबन की अनुमति देता है।

संसदीय व्यवधानों के परिणाम:

सार्वजनिक विश्वास की हानि: लोकतांत्रिक संस्थानों और शासन में विश्वास कम हो जाता है।

संसाधनों की बर्बादी: गैर-उत्पादक संसदीय सत्रों पर लाखों रुपये खर्च किये गये।

छूटे हुए अवसर: गंभीर सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों पर विलंबित या अधूरा कानून।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा: एक स्थिर लोकतंत्र के रूप में भारत की छवि को ख़राब करता है।

पश्चिमी गोलार्ध:

आम सहमति बनाना: विवादों को सुलझाने के लिए सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के बीच बातचीत को बढ़ावा देना। सख्त प्रवर्तन: पीठासीन अधिकारियों को बार-बार व्यवधान के लिए निलंबन नियमों को लागू करना चाहिए। नैतिक प्रशिक्षण: राजनीति में युवाओं को मर्यादा और जवाबदेही को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करें।

विधान-पूर्व परामर्श: विवादास्पद विधेयक पेश करने से पहले विपक्ष की चिंताओं का समाधान करें। सार्वजनिक जागरूकता: जवाबदेही बढ़ाने के लिए व्यवधानों के परिणामों के बारे में नागरिकों की समझ को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष:

भारत के लोकतांत्रिक लोकाचार को बनाए रखने के लिए, सभी हितधारकों को यह सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक रूप से काम करना चाहिए कि संसद रचनात्मक बहस और नीति निर्धारण का केंद्र बने। विधायी संस्थानों की पवित्रता को बहाल करने के लिए आम सहमति बनाना और संसदीय नियमों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

सीरिया और मध्य पूर्व तनाव

विद्रोही समूहों के 11 दिनों के हमले के बाद सीरिया में बशर अल-असद के शासन के पतन ने मध्य पूर्व में भूराजनीतिक फेरबदल शुरू कर दिया है।

मध्य पूर्व तनाव और सीरिया का हालिया पतन:

सीरिया का पतन

सत्तावाद की विशेषता वाला असद का शासन अल-कायदा के पूर्व संचालक अबू मोहम्मद अल-जौलानी के नेतृत्व वाली विद्रोही ताकतों के निरंतर दबाव के बाद समाप्त हो गया।

ईरान और रूस जैसे बाहरी समर्थकों ने अपना ध्यान कहीं और केंद्रित कर लिया, जिससे असद की हार में योगदान हुआ।

क्षेत्रीय गतिशीलता

तुर्की समर्थित हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी।

सीरिया के भविष्य के शासन और इस्लामी अधिनायकवाद में संभावित वंश के बारे में प्रश्न उठते हैं।

मध्य पूर्व में तनाव के पीछे कारक

सत्तावादी शासन व्यवस्थाएँ: कमज़ोर राजनीतिक प्रणालियाँ अक्सर आंतरिक असहमति या बाहरी हस्तक्षेप के दबाव में ध्वस्त हो जाती हैं।

छद्म संघर्ष: वैश्विक शक्तियों (जैसे, रूस, अमेरिका) और क्षेत्रीय खिलाड़ियों (जैसे, ईरान, तुर्की) के बीच प्रतिद्वंद्विता अस्थिरता को बढ़ाती है।

सांप्रदायिक विभाजन: सुन्नी-शिया तनाव कई संघर्षों को जन्म देता है, हिंसा और क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता को बढ़ावा देता है।

भूराजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ: तुर्की, ईरान और सऊदी अरब जैसे देशों का लक्ष्य अक्सर क्षेत्रीय स्थिरता की कीमत पर अपना प्रभाव बढ़ाना है।

प्रभाव:

क्षेत्र में:

सत्ता शून्य: असद की अनुपस्थिति से विद्रोही गुटों के बीच अंदरूनी कलह हो सकती है।

अस्थिरता: चरमपंथी समूहों के संभावित उदय से क्षेत्रीय शांति को खतरा है।

आर्थिक नतीजे: चल रहे संघर्ष व्यापार और आर्थिक सुधार को बाधित करते हैं।

शरणार्थी संकट: नागरिकों का नए सिरे से विस्थापन मानवीय चुनौतियों को बढ़ा देता है।

भारत पर:

ऊर्जा सुरक्षा: मध्य पूर्व में अस्थिरता तेल आयात को प्रभावित कर सकती है।

प्रवासी जोखिम: खाड़ी देशों में भारतीय कामगारों को ख़तरा।

भू-राजनीतिक संतुलन: ईरान और सऊदी अरब जैसी क्षेत्रीय शक्तियों के साथ संबंधों को आगे बढ़ाना।

रणनीतिक रुचियाँ: अस्थिर क्षेत्र में प्रभाव बनाए रखना।

विश्व स्तर पर:

उग्रवाद का उदय: कट्टरपंथी इस्लामी आंदोलनों के क्षेत्र से बाहर फैलने का खतरा। भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता: अमेरिका, रूस और चीन जैसी वैश्विक शक्तियों के बीच नए सिरे से तनाव। आर्थिक प्रभाव: तेल बाज़ार की अस्थिरता वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करती है।

मानवीय चिंताएँ: बढ़ते संकट अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप की माँग करते हैं।

पश्चिमी गोलार्ध

समावेशी शासन: विद्रोही गुटों को अल्पसंख्यक अधिकार का सम्मान करते हुए एक बहुलवादी ढांचा बनाना होगा। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: वैश्विक शक्तियों को स्थिरता सुनिश्चित करने और उग्रवाद को रोकने के लिए मध्यस्थता करनी चाहिए। क्षेत्रीय स्थिरता: तुर्की और सऊदी अरब जैसे देशों को प्रभाव से अधिक शांति को प्राथमिकता देनी चाहिए।

मानवीय सहायता: प्रभावित क्षेत्रों में विस्थापन, भूख और स्वास्थ्य देखभाल संकट को दूर करने पर ध्यान केंद्रित करें।

निष्कर्ष:

असद का पतन मध्य पूर्व में एक परिवर्तनकारी चरण का संकेत देता है, जो अनिश्चितता और अवसरों से भरा है। सीरिया और व्यापक क्षेत्र में स्थिरता समावेशी शासन, क्षेत्रीय सहयोग और अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता पर निर्भर है

भूमि क्षरण पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने रियाद में COP16 के दौरान अपनी रिपोर्ट, द ग्लोबल थ्रेट ऑफ ड्राईंग लैंड्स जारी की, जिसमें वैश्विक कृषि प्रणालियों के लिए शुष्कता के बढ़ते खतरे पर जोर दिया गया।

संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं:

शुष्कता की सीमा

पृथ्वी की 40% कृषि योग्य भूमि (5.7 मिलियन वर्ग किमी) को प्रभावित करता है और मिट्टी के कटाव पर विचार करने पर अतिरिक्त 7% प्रभावित होता है।

1961-2020 के बीच पृथ्वी की 77.6% भूमि स्थायी रूप से शुष्क हो गई।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

2040 तक वैश्विक शुष्क क्षेत्रों में 3.9% की वृद्धि हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण फसल हानि हो सकती है:

20 मिलियन टन मक्का 19 मिलियन टन चावल

8 मिलियन टन सोयाबीन 21 मिलियन टन गेहूं क्षेत्रीय प्रभाव

उप-सहारा अफ्रीका: सदी के मध्य तक फसल उत्पादन का 22% तक नुकसान हो सकता है।

केन्या: 2050 तक मक्के का उत्पादन 50% तक घट सकता है।

दक्षिण एशिया और उत्तरी अफ्रीका: वर्षा आधारित कृषि में उल्लेखनीय गिरावट की उम्मीद है।

राजगोपालाचारी

श्री सी. राजगोपालाचारी की जयंती पर, पीएम मोदी ने शासन, साहित्य और सामाजिक सशक्तिकरण में उनके बहुमुखी योगदान का सम्मान किया।

सी. राजगोपालाचारी के बारे में:

जन्म: 10 दिसंबर, 1878, थोरापल्ली, मद्रास प्रेसीडेंसी (अब तमिलनाडु, भारत) में। परिवार: तमिल भाषी अयंगर ब्राह्मण परिवार से थे; पिता वकील थे. स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान:

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी): कानूनी सलाहकार और महासचिव के रूप में कार्य किया। असहयोग आंदोलन: ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थानों के बहिष्कार को बढ़ावा दिया। सविनय अवज्ञा आंदोलन: मद्रास प्रेसीडेंसी में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया।

राजाजी फॉर्मूला (1944): विभाजन पर कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच संघर्ष को हल करने के लिए एक रूपरेखा का प्रस्ताव रखा।

कूटनीतिक प्रयास: गोलमेज सम्मेलनों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) का प्रतिनिधित्व किया और स्वतंत्रता के लिए शांतिपूर्ण बातचीत की वकालत की।

स्वतंत्रता के बाद का योगदान:

भारत के गवर्नर-जनरल (1948-1950): अंतिम गवर्नर-जनरल; भारत गणराज्य में परिवर्तन का निरीक्षण किया।

मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री (1952-1954): शिक्षा, कृषि और ग्रामीण विकास में सुधार पेश किए।

स्वतंत्र पार्टी के संस्थापक (1959): मुक्त बाज़ार सिद्धांतों और आर्थिक उदारीकरण की वकालत की।

साहित्यिक कार्य:

अनुवाद:

महाभारत और रामायण (अंग्रेजी)।

रामायण (चक्रवर्ती थिरुमगन) का तमिल अनुवाद, जिसने 1958 में साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता।

हिंदू धर्म: सिद्धांत और जीवन शैली: हिंदू धर्मग्रंथों और दर्शन का अन्वेषण किया।

आत्मकथा: राजाजी: ए लाइफ।

पुरस्कार और मान्यताएँ:

भारत रत्न (1954): राजनीति, साहित्य और सार्वजनिक सेवा में योगदान के लिए।

रेमन मैग्सेसे पुरस्कार (1958): मद्रास के मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान नेतृत्व के लिए।

साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप: साहित्य में योगदान के लिए सम्मानित। रामानुजन पुरस्कार (1962): तिरुक्कुरल का अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए। मृत्यु: 25 दिसंबर, 1972, चेन्नई, तमिलनाडु में, 94 वर्ष की आयु में।

डुलसिबेला कैमानचाका

सबसे गहरे समुद्री क्षेत्रों में से एक, अटाकामा ट्रेंच, एक नए शिकारी उभयचर डुलसिबेला कैमंचाका की खोज के साथ अद्वितीय जैव विविधता का खुलासा करता है।

डुलसिबेला कैमानचाका के बारे में:

में पाया:

अटाकामा ट्रेंच, दक्षिण प्रशांत महासागर, 7,902 मीटर की गहराई पर।

विशेषताएँ:

शिकार को पकड़ने के लिए रैप्टोरियल उपांगों से सुसज्जित।

भोजन-सीमित आवास में सक्रिय शिकारी छोटे उभयचरों पर भोजन करते हैं।

महत्व:

अटाकामा ट्रेंच में खोजा गया पहला बड़ा, सक्रिय शिकारी एम्फ़िपोड।

एक नई प्रजाति का प्रतिनिधित्व करता है, जो एक स्थानिक जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में खाई की स्थिति को प्रदर्शित करता है।

अद्वितीय प्रजातियों को उजागर करने और चरम समुद्री पारिस्थितिक तंत्र को समझने के लिए गहरे समुद्र की खोज के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।